Knowing the True God

Rev. Steven Houck

Hindi

सच्चे परमेश्वर को जानना

रेव्ह. स्टिवन हॉक

अनंत जीवन

क्या आप सच्चे परमेश्वर को जानते हैं? वह नहीं जो मनुष्यों की कल्पना में है, पर वह परमेश्वर जिसका वर्णन बाइबल में है? क्या आप उसे निकट से पहचानते हैं, इतना कि उससे प्रेम और उसकी सेवा कर सकें? यह अत्याधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। बाइबल की शिक्षा है कि **परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह को जानना ही अनंत जीवन ह**। यीशु कहते हैं और अनंत जीवन यह है कि वे तुझे जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और यीशु मसीह को जानें, जिसे तू ने भेजा है (यूहन्ना 17:3)। यदि आप अनंत जीवन पाना और परमेश्वर के साथ सदा स्वर्ग में रहना चाहते हैं तो आपको परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह को अवश्य जानना चाहिए।

यदि आप सच्चे परमेश्वर को जानने में रूचि रखते हैं, कृपया नीचे दी गयी बातों को सावधानीपूर्वक पढ़ें–

सच्चा परमेश्वर

बाइबल सिखाती है कि **परमेश्वर अति महान् और महिमामय है।** वह सर्वोच्च परमेश्वर है। "यहोवा सब जातियों के ऊपर महान् है, उसकी महिमा आकाश से भी ऊपर है। हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है? वह तो ऊंचे पर विराजमान है और आकाश वरन् पृथ्वी पर भी दृष्टि करने के लिए नीचे झुकता है"! (भजन 113:4–6)। परमेश्वर इतना महान् है कि उसके तुल्य कोई नहीं है। संसार में ऐसा कोई नहीं जिसकी परमेश्वर से तुलना की जा सके। परमेश्वर एक ईश्वरीय अस्तित्व में तीन व्यक्ति है– पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। परमेश्वर असीम, स्व–पर्याप्त, अपरिवर्तनीय और संप्रभु है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी और सर्वत्र उपस्थित है। स्वर्ग और पृथ्वी का परमेश्वर पवित्र, धर्मी, और न्यायी ईश्वर है। वह प्रेम, अनुग्रह, और सत्य से परिपूर्ण है। वह इतना महान है कि उसकी महिमा समस्त जातियों के ऊपर यहां तक कि आकाशों से भी ऊपर है। हम उसकी तुलना में कछ नहीं है। "समस्त जातियां उसके (परमेश्वर के) सामने नगण्य है, वे तो उसके लिए शून्य से भी कम और व्यर्थ ठहरती है" (यशायाह 40:17)।

परमेश्वर की महानता उसके द्वारा किए जाने वाले अद्‌भुत कामों में देखी जा सकती है। बाइबल सिखाती है कि **परमेश्वर सभी वस्तुओं का सृजनहार ह।** उत्पत्ति 1:1 में हम पढ़ते है "आदि में परमेश्वर न आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" वि"व उद्विकास की किसी प्रक्रिया के फलस्वरूप

अस्तित्व में नहीं आया। उसे परमेश्वर द्वारा छह दिनों मे सृजा गया। परमेश्वर ने केवल अपना सर्व शक्तिमान वचन कहा और संसार अस्तित्व में आया। ''आकाशमण्डल यहोवा के वचन से और उसके सारे गणों की रचना उसी के मुंह की श्वांस से हुई––– क्योंकि वह बोला और हो गया, उसने आज्ञा दी, और ठीक वैसा ही हो गया' (भजनसंहिता 33:6,9)। परमेश्वर इतना महान है कि उसने संसार को 'कुछ नहीं' में से बनाया। बाइबल हमें सिखाती है, ''––––– परमेश्वर के वचन के द्वारा समस्त सृष्टि की रचना ऐसी की गई कि जो कुछ देखने में आता है, वह दिखाई देने वाली वस्तुओं से नहीं बनाया गया था'' (इब्रानियों 11:3)। प्रत्येक प्राणी, आप भी उसमें शामिल हैं, उसका अस्तित्व परमेश्वर के कारण है।

परमेश्वर केवल संसार का सृष्टिकर्ता नहीं है पर **वह संसार का संभालने वाला भी है।** वह संसार को जोड़कर (बनाकर) रखता है ताकि उसका अस्तित्व बना रहे। ''तू ही यहोवा है, तू ने ही स्वर्ग, वरन् सबसे ऊंचे स्वर्ग और उसके समस्त तारागण पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, समुद्र और जो कुछ उसमें है, सबको बनाया। तू ही उन सभी को जीवन देता है––––––'' (नहेम्याह 9:6)। परमेश्वर की संरक्षण देने वाली सामर्थ के बिना समस्त संसार का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। वि"व अपने आप बना नहीं रह सकता, उसे परमेश्वर ने सृजा है और इसलिये अस्तित्व में बने रहने के लिए उसे परमेश्वर की आवश्यकता है। आप कुछ भी नहीं हैं और परमेश्वर की संभालने वाली सामर्थ के बिना आप कुछ भी नहीं कर सकते। ''क्योंकि वह स्वयं सबको जीवन, श्वांस और सब कुछ प्रदान करता है––––––उसी में हम जीवित रहते चलते फिरते और अस्तित्व रखते है––––'' (प्रेरितों के काम 17:25, 28)। परमेश्वर की संभालने वाली सामर्थ के बिना आप चल फिर भी नहीं सकते।

परमेश्वर की महानता उसकी सृष्टि और संसार को संभालने की सामर्थ में ही नहीं, परंतु संसार पर उसके नियंत्रण से भी प्रदर्शित होती है। **परमेश्वर संसार का शासक है।** ''यहोवा ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थापित किया है, और उसका प्रभुत्व सब पर शासन करता है''(भजन 103:19)। परमेश्वर ही "एकमात्र सम्राट, राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है" (1 तीमुथियुस 6:15)। वह निर्बल ईश्वर नहीं है जिसकी इच्छा उसके सृजे गए प्राणीयों के द्वारा असफल या निरा"ा हो जाए। वह अनंतकाल का राजा है, जो सब पर जिसमें आप और मैं भी शामिल है, राज्य करता है। वह संसार की सब बातों पर इस प्रकार नियंत्रण रखता है कि संसार और जो कुछ उस में है, उसके प्रति अपनी अनंतकाल से विचारित योजना को पूरी करता है। वह ''अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार सब कुछ करता है'' (इफिसियों 1:11)। परमेश्वर आपका शासक और राजा है।

इस कारण संसार का कोई प्राणी परमेश्वर से अलग (स्वतंत्र) नहीं है। हम सबको परमेश्वर की आवश्यकता है। आपका आपका अपना जीवन सच्चे परमेश्वर से प्राप्त हुआ है जिसके लिए आप उसके कर्जदार है। साथ ही **परमेश्वर ने आपकी सृष्टि अपनी निज महिमा के लिए की है।** बाइबल परमेश्वर के बारे में कहती है, ''तू ने ही सब वस्तुओं को सृजा, और उनका अस्तित्व और उनकी सृष्टि तेरी ही इच्छा से हुई'' (प्रका.वाक्य 4:11)। आप अपने सुख के लिए नहीं सृजे गए थे। आप केवल इसलिये नहीं सृजे गए कि आप अस्तित्व में रहें। आपको परमेश्वर के आनंद और महिमा के लिए अस्तित्व में लाया गया।

परमेश्वर की आवश्यकताएं

परमेश्वर एक महान और महिमामय सृजनकर्ता, संभालने वाला और संसार का शासक है, इस कारण **वह आपके आदर और सम्मान का हकदार है।** बाइबल में हम पढ़ते हैं, ''हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा, आदर और सामर्थ के योग्य है क्योंकि तू ने ही सब वस्तुओं को सृजा––––''(प्रका.वाक्य 4:11) परमेश्वर जितने भी कामों को करते हैं उनमें वे अपने आपको अतिशय अद्‌भुत और अति भव्य दर्शाते हैं ताकि आप उसके समक्ष विस्मित और भय सहित खड़े रहे। **परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसका भय माने और उसका आदर करें।** ''सारी पृथ्वी यहोवा से डरे, जगत के सब निवासी उसका भय

माने''(भजन संहिता 33:8) यह एक विकल्प नहीं है। यह परमेश्वर की आज्ञा है। आपकी नैतिक बाध्यता है कि आप आपके सृजनकर्ता के प्रति गहरा आदर भाव रखें।

परमेश्वर आपसे जो सम्मान चाहते हैं उसकी अभिव्यक्ति, आराधना, धन्यवाद और सेवा में होनी चाहिए। परमेश्वर का सृजित प्राणी होने के कारण आपको उसकी आराधना करना अव"य है। ''आओ, हम झुककर आराधना करें और अपने सृजनहार यहोवा के सामने घुटने टेकें'' (भजनसंहिता 95:6)। परमेश्वर आपको बुलाते है कि आप उसे सृजनकर्ता, संभालने वाला और शासक (राजा) मानकर आराधना में उसके सामने झुके। आप की आराधना उन सब बातों के लिए जो आपके सृजनकर्ता परमेश्वर ने आपके लिए की है, आपके धन्यवाद की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। बाइबल यहां तक कहती है कि आप स्तुति प्रशंसा के गीत गाएं, ''हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा का जय–जयकार करो––––– उसके फाटकों में धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसे धन्यवाद दो, और उसके नाम को धन्य कहो'' (भजनसंहिता 100:1, 4)। आपका संपूर्ण जीवन परमेश्वर की सेवा के लिए अलग (समर्पित) किया जाना चाहिए। आपके सभी गुण (प्रतिभाएं), समय, और संसाधन, अवश्य है कि उसकी महिमा के लिए उपयोग किए जाएं। यीशु कहते हैं, ''तू प्रभ अपने परमेश्वर को दण्डवत् कर, और केवल उसी की **सेवा** कर'' (लूका 4:8)।

आराधना धन्यवाद और सेवा की अभिव्यक्ति परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में है–बाइबल में लेख है ''परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर, क्योंकि मनुष्य का (संपूर्ण) कर्तव्य यहीं है (सभोपदेशक 12:13)। परमेश्वर के प्रति आपके संपूर्ण कर्तव्य परमेश्वर की व्यवस्था में दिए गए हैं। दस आज्ञाओं में वह बताता है कि वह आपसे क्या चाहता है। बाइबल में परमेश्वर की व्यवस्था निर्गमन के 20 अध्याय की प्रथम 17 पदों में मिलती है।

आप पहली चार आज्ञाओं में परमेश्वर के प्रति आपके विशेष कर्तव्य सीखते हैं।

1. आप केवल एक ईश्वर अर्थात बाइबल के सच्चे परमेश्वर को मानें। केवल उसे ही आपका प्रेम और आराधना मिले। अन्य सभी ईश्वर (देवी–देवता) झूठे ईश्वर है। अन्य धर्मों के ईश्वर, और सुख, धन–सम्पत्ति और सत्ता (सामर्थ) के ईश्वरो का परित्याग करना चाहिए।

2. आप परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने किसी प्रकार की मूरत न बनाये, और न ही मूर्तियों के माध्यम से उसकी आराधना करें। परमेश्वर के वचन का प्रचार सुनने और उस पर अमल करने के द्वारा आपको परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।

3. शाप देने, उसके नाम को शपथ खाने, और अर्थहीन तरीकों में उसके नाम का उपयोग करने के लिए परमेश्वर मना करते हैं ताकि आप उसका नाम व्यर्थ न लें। उसके पवित्र नाम का भय मानने और आदर करने के लिए आप सदैव सावधान रहें।

4. परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसके सब्त (रविवार) के दिन को पवित्र मानें। यह एक विशेष दिन है। आप काम करने या मनोरंजन करने में इसका उपयोग न करें, परंतु परमेश्वर की आराधना और सेवा में उसका उपयोग करें। आपको आराधना के लिए ऐसी कलीसिया में जाना चाहिए जिसमें बाइबल के सत्य का प्रचार किया जाता है।

परमेश्वर केवल इतना ही नहीं चाहते कि उनके प्रति आपका आचरण एक विशेष रीति पर हो, परंतु यह **कि मनुष्य जाति के प्रति भी आपका आचरण एक विशेष (निश्चित) रीति पर हो।** ये कर्तव्य शेष छह आज्ञाओं में बताए गए हैं।

1. आपको अपने माता–पिता का आदर करना होगा और उन सबका भी जिनका आपके ऊपर अधिकार है जैसे शासकीय अधिकारी, कलीसिया के अगुवे और आपका नियोक्ता इत्यादि। यह आदर सम्मान आपके द्वारा उनका आदर करने, उनके आधीन रहने और उनकी आज्ञा मानने में अभिव्यक्त होता है।

2. परमेश्वर किसी व्यक्ति को नुकसान पहुंचाने, उससे घृणा करने, उसकी हत्या करने (जिसमें आप स्वयं भी शामिल हैं) के लिये मना करते हैं। परमेश्वर की दृष्टि में ईर्ष्या, घृणा, क्रोध और बदले की भावना रखना घृणित है। यहां तक कि आपको अपने शत्रु से भी प्रेम करना है।

3. आप ऐसे किसी भी व्यक्ति से यौन संबंध नहों बना सकते जो आपके वैध पति या पत्नि नहीं है। परमेश्वर हृदय मे व्याभिचार के विचार अर्थात कामुकता के विचार (कल्पनाएं) और अभिलाषाओं की भी वर्जना करते हैं।

4. आप किसी दूसरे की वस्तु चोरो नहीं कर सकते। आपको अपने लिए धन संपत्ति या वस्तुएं अपने ईमानदारी से किए गए परिश्रम के द्वारा अर्जित करना चाहिए।

5. आप किसी के बार में झूठी साक्षी नहीं दे सकते अर्थात किसी की निंदा, पीठ पीछे बुराई और कानाफूसी (अफवाहें फैलाना) जैसे काम नहीं कर सकते। सभी प्रकार के झूठ बोलना वर्जित है।

6. आप किसी भी ऐसी वस्तु की लालच नहीं करेंगे (हृदय में अभिलाषा भी नहीं रखेंगे) जो किसी दूसरे की है।

यह बात स्पष्ट दिखाई देती है कि परमेश्वर न केवल बाहरी तौर पर आज्ञाकारिता चाहते हैं परंतु आपके हृदय की आज्ञाकारिता भी चाहते हैं। अवश्य है कि परमेश्वर जिनकी वर्जना करते हैं आप का हृदय उन सब बातों से घृणा करें, और समस्त धार्मिकता में आनंदित रहे। यीशु हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था का सार एक शब्द **प्रेम** में दिया जा सकता है। वे कहते हैं ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर। यही बड़ी और प्रमुख आज्ञा है। और इसी के समान दूसरी यह है तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर। यही दो आज्ञाएं संपूर्ण व्यवस्था और नबियों का आधार हैं''(मत्ती 22:37–40)। **परमेश्वर इस सिद्ध प्रेम से कमतर कुछ और नहीं चाहता।** आपको अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ उससे प्रेम करना चाहिये। अवश्य है कि आपके आदर भाव, आराधना, धन्यवाद और सेवा का आधार परमेश्वर के लिये आपका प्रेम हो।

मनुष्य की असफलता

यदि आप समझते हैं कि परमेश्वर आपका सृजनकर्ता, संभालने वाला, और शासन करने वाला है, जो आपसे प्रेम, आराधना, और सेवा की मांग करता है, तब आपको अपने बारे में भी कुछ मूलभूत बातों को समझना आवश्यक है– **आप एक पापी व्यक्ति है जो परमेश्वर के प्रति अपनी बाध्यता को पूरा करने में असफल है।** आप परमेश्वर को वैसा प्रेम, आराधना और सेवा नहीं देते, जैसी देनी चाहिये। आप दस आज्ञाओं को नहीं मानते जिन्हें परमेश्वर ने दिया है। भले ही बाहरी तौर पर आप इन आज्ञाओं में से कुछ का उल्लंघन नहीं करते फिर भी सभव है उन सब का उल्लंघन अपने हृदय में करते हैं। आप अपने संपूर्ण हृदय, प्राण, और बल के साथ परमेश्वर से प्रेम नहीं करते। आपका संपूर्ण जीवन परमेश्वर की आराधना और सेवा के लिये अलग (पवित्र) नहीं किया गया है। आप दुष्ट है और आपको मानना चाहिये– ''हे मनुष्यों के पहरेदार, मैंने पाप तो किया होगा, मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है?––––––– मेरे अधर्म के काम और पाप कितने हैं?''–––देख मैं तो तुच्छ हूं, मैं तुझे क्या उत्तर दूं, मैं अपना हाथ अपने मुंह पर रखता हूं (अय्यूब 7:20, 13:23, 40:4)। यदि आप इंकार करते हैं कि आप पापी नहीं है,

तब आप परमेश्वर के प्रति और स्वयं अपने प्रति बेईमान है। बाइबल में लिखा है, ''यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं है'' (यूहन्ना 1:8)।

परमेश्वर के अनुग्रह से बाहर कोई व्यक्ति ऐसा कुछ नहीं कर सकता जो भला और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है। सभी मनुष्य इस बात में एक समान है कि सभी पापी हैं। ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं, कोई समझदार नहीं। कोई भी नहीं जो परमेश्वर को खोजता है। सब भटक गए वे सब निकम्मे बन गये हैं, कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं'' (रोमियों 3:10–12)। कोई अपवाद नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने में असफल है। यहां तक कि वे काम जो बहुत अच्छे प्रतीत होते हैं वे भी परमेश्वर के लिये अच्छे नहीं हैं। बाइबल में लेख है ''हमारे धर्म के काम मैले चिथड़ों के समान हैं'' (यशायाह 64:6)। परमेश्वर सिद्धता चाहते हैं परंतु मनुष्य सिद्धता से दूर है।

परमेश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने में आपकी असमर्थता परमेश्वर के कारण नहीं है। परमेश्वर ने मनुष्य को धर्मी सृजा और इस योग्य बनाया कि परमेश्वर जो चाहते हैं, वह सब कर सके। परंतु हमारे आदि पिता आदम ने परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया। उसने परमेश्वर की अवज्ञा की और धार्मिकता की दशा से पाप में जा गिरा। उस पाप के परिणामस्वरूप आदम का आंतरिक आत्मिक स्वभाव दुष्ट बन गया। परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी सेवा करने के बदले उसने पाप और शैतान से प्रेम किया उनकी सेवा की। आदम का वह आत्मिक रूप में भ्रष्ट स्वभाव उसके बाद उसकी संतानों को मिला। **अब क्योंकि आप भी आदम का वंश है, आपने भी उस भ्रष्ट स्वभाव को मीरास में पाया है।** ''जिस प्रकार एक मनुष्य के द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया तथा पाप के द्वारा मृत्यु आई, उसी प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया'' (रोमियों 5:12)। बाइबल इस आत्मिक भ्रष्टता को *मृत्यु* अर्थात आत्मिक मृत्यु कहती है। आप पाप करते हैं, क्योंकि आपका आंतरिक आत्मिक स्वभाव दुष्ट है। आप आत्मिक रूप में मृत है। बाइबल मनुष्य के दुष्ट आंतरिक स्वभाव के विषय में कहते हुए लिखती है, ''मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखेबाज होता है, और असाध्य रोग से ग्रस्त है, उसे कौन समझ सकता है?'' (यिर्मयाह 17:9)।

साथ ही, आपके कर्तव्यों को पूरा करने की आपकी असमर्थता इस तथ्य में कोई परिवर्तन नहीं करती और परमेश्वर की आवश्यकता यथावत बनी रहती है। परमेश्वर नहीं बदला है। **वह अब भी पवित्र परमेश्वर है।** स्वर्गदूत उसके समक्ष ऊंचे स्वर में पुकारते हैं, ''सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र पवित्र है'' (यशायाह 6:3)। पवित्र होने के कारण परमेश्वर नतिक रूप में सिद्ध है। वह स्वयं पाप नहीं कर सकता, और न दूसरों में पाप को सहन कर सकता है। परमेश्वर पाप से घृणा करता है और उनसे भी जो पाप करते हैं। बाइबल में परमेश्वर के विषय में लेख है, तू ऐसा ईश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न होता हो, तुझमें कोई बुराई रह नहीं सकती। अहंकारी तेरी आंखों के सामने खड़े नहीं रह सकेंगे। तू सब कुकर्मियों से घृणा करता है। झूठ बोलने वालों को तू नाश करता है, हत्यारे और छली मनुष्य से यहोवा घृणा करता है (भजनसंहिता 5:4–6)। **परमेश्वर जलन रखने वाला परमेश्वर है।** वह कहता है ''किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत करने की तुझको आज्ञा नहीं क्योंकि यहोवा जिसका नाम जलन रखने वाला है, वह जल उठने वाला परमेश्वर है''(निर्गमन 34:14)। भले ही आप पापी है, आप तब भी परमेश्वर की सृष्टि है, और जलन के कारण आपको किसी अन्य को ईश्वर मानने से मना करता है। जलन रखने वाला ईश्वर मांग करता है कि आप केवल उससे ही प्रेम करें, उसी की आराधना करें, और केवल उसी की सेवा करें।

अब क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा नहीं करता, बिना अपवाद सभी मनुष्य परमेश्वर की भर्त्सना और अनंत विनाश के हकदार है। **आप नरक में अनंतकाल के दण्ड के योग्य है।** परमेश्वर अपनी पवित्रता के कारण इतना ईर्ष्यालु है कि उसे सभी को उनके पाप के कारण दण्ड

देना अव"य है। यहोवा तो जल उठने वाला और बदला लेने वाला परमेश्वर है, यहोवा बदला लेने वाला और कोप करने वाला परमेश्वर है। यहोवा अपने विरोधियों से बदला लेता है और अपने शत्रुओं के लिये क्रोध रखता है। यहोवा विलंब से क्रोध करने वाला और महाशक्तिशाली है, और दोषी को यहोवा दण्ड दिये बिना कदापि न छोड़ेगा–––––(नहूम 1:2–3)। जगत के अंत के समय परमेश्वर उन सबको नरक की अनंत पीड़ा में भेजेगा जिन्होंने उसके अनुग्रह से उद्धार नहीं पाया, और इस कारण वे अब भी उनके पापों में हैं। यीशु कहते हैं , ''इस युग के अंत में ऐसा हो होगा स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के भट्टे में डाल देंगे, जहां रोना और दांत पीसना होगा''(मत्ती 13:49–50)। परमेश्वर के अनुग्रह के बाहर कोई भी परमेश्वर के पलटा लेने वाले कोप के अनंत कालीन दण्ड से नहीं बच सकता।

परमेश्वर का उद्धार

मनुष्य की स्थिति निराशाजनक लगती है। हम परमेश्वर के क्रोध और नरक में अनंतकाल के विनाश से कैसे बच सकते हैं? पापीजन कैसे परमेश्वर को निकट से जान सकते हैं और उसके साथ सहभागिता रख सकते हैं? पापीजन कैसे पवित्र बन सकता है? मनुष्य के लिये यह असंभव है। कौन अशुद्ध में से शुद्ध निकाल सकता है? कोई नहीं (अय्यूब 14:4)। परंतु जो मनुष्य के लिये असंभव है, वह परमेश्वर के लिये असंभव नहीं है। **महिमामय सृष्टिकर्ता, संभालने वाला और संसार का शासक (राजा) उद्धारकर्ता भी है जो पाप, मृत्यु और नरक से छुटकारा देता है।** परमेश्वर कहते हैं ''मैं, हां मैं ही यहोवा हूं, और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं है''(यशायाह 43:11)। सच्चा परमेश्वर न केवल धर्मी और पवित्र परमेश्वर है जिसे पापियों को दण्ड देना चाहिये, परंतु वह प्रेम और अनुग्रह का परमेश्वर भी है जो दया करता है। अपने अनुगह और प्रेम में उसने **उद्धार का कार्य संपन्न करने के लिये यीशु मसीह को भेजा।** परमेश्वर ही, यीशु मसीह में, एकमात्र उद्धारकर्ता है।

यीशु मसीह परमेश्वर का अनंत कालीन पुत्र है जो पृथ्वी पर आया और जिसने मनुष्य का स्वभाव धारण किया। वह सच्चा परमेश्वर है परंतु वह वास्तविक मनुष्य भी है। मसीह में '' परमेश्वर शरीर में होकर प्रगट हुआ'' (1 तीमुथियुस 3:16)। ''उसका नाम इम्मानुएल है, जिसका अर्थ है, परमेश्वर हमारे साथ''(मत्ती 1:23)। योशु पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आया और मरियम नाम कुंवारी से जन्मा। जब वह वयस्क हुआ, उसने साढ़े तीन वर्ष सुसमाचार प्रचार किया। उसने लोगों को परमेश्वर,उसके सत्य, और उद्धार के बारे में बताया। बीमारों को चंगा करके, यहां तक कि मृतकों को पुनः जीवन देकर उसने परमेश्वर की उस सामर्थ को प्रदर्शित किया जो पापियों का उद्धार करती है। अपने पूरे जीवन में उसने परमेश्वर से प्रेम, सेवा और उसका आज्ञापालन सिद्ध रूप में किया। अपने जीवन के अंत में दुष्ट मनुष्यों ने उसे कलवरी ले जाकर क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया, जहां उसकी मृत्यु हो गयी, जैसा परमेश्वर ने अनंतकाल से योजना बनाई थी। कब्र में तीन दिन रहने के प"चात् वह मृतकों में से जी उठा। वह स्वर्ग पर उठाया गया और अब परमेश्वर के दाहिने बैठा है, और संसार पर राज्य करता है जब तक कि वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने वापस नहीं आता।

अपनी बलिदानी मृत्यु के द्वारा मसीह ने उद्धार को प्राप्त किया। जब मसीह ने क्रूस पर दुख और मृत्यु को सहा तब उसने अपनी देह में उन सबके पापों को उठा लिया जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार देने के लिये चुना। मसीह भी सब के पापों के लिये एक ही बार मर गया, अर्थात अधर्मियों के लिये धर्मी जिस से वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए (1 पतरस 3:18)। उनके पाप मसीह के पाप गिने गये और परमेश्वर ने उनके बदले में मसीह को दण्ड दिया। परमेश्वर के प्रति उनके कर्ज को मसीह ने चुकाया ताकि उन्हें **उनके पापों की क्षमा मिले।** हम पढ़ते हैं, जिसमें (अर्थात मसीह में) हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है (कुलु 1:14)। साथ ही, मसीह की संपूर्ण धार्मिकता अब उनकी धार्मिकता गिनी जाती है, मानो वे सिद्ध रूप में परमेश्वर से प्रेम, उसकी आराधना, और सेवा और आज्ञापालन

करते हैं। उनके बदले में मसीह ने परमेश्वर की आवश्यकता (मांग) को पूरा किया। "जैसे एक मनुष्य (आदम) के आज्ञा उल्लंघन से अनेक पापी ठहराये गये वैसे ही एक मनुष्य (मसीह) की आज्ञाकारिता से अनेक मनुष्य धर्मी ठहराये जाएंगे।" (रोमियों 5:19)। मसीह की मृत्यु पापियों को परमेश्वर के क्रोध और दण्ड से बचाती है। "अतः अब उन पर जो मसीह यीशु में है, दण्ड की आज्ञा नहीं"———(रोमियों 8:1)।

मसीह ने क्रूस पर अपने कार्यों से न केवल उद्धार प्राप्त किया परंतु उसे उन सबके जीवनों में दिया जिन्हें उसने उद्धार देने के लिए चुना ताकि वे वास्तव में उद्धार का अनुभव प्राप्त करें। उन्हें एक आंतरिक आत्मिक नया स्वभाव देने के द्वारा जो उससे प्रेम करता है, **मसीह ने उन्हें उनकी आत्मिक मृत्यु से जिलाकर आत्मिक जीवन में पहुंचाया।** इस कारण परमेश्वर ने कहा ''मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करूंगा————————तुम्हें अपनी विधियों पर चलाऊंगा और तुम मेरे नियमों का सावधानी से पालन करोगे''(यहेजकेल 36:26–27)। मसीह उस नए हृदय से **विश्वास और पश्चाताप करने की बुलाहट देते है**, ताकि परमेश्वर की नई संतान विश्वास के द्वारा अपने पापों से मन फिराये और सच्चे परमेश्वर की आराधना और सेवा करे, भले ही यह सिद्ध रूप में न हो सके। वह परमेश्वर को अति घनिष्ठ और व्यक्तिगत रूप में अपने उद्धारकर्ता के रूप में जानने लगता है। परमेश्वर उससे बातचीत करते हैं और उसके साथ चलते फिरते है ताकि वे एक दूसरे के साथ सहभागिता रख सके। "हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ चुका है और उसने हमें समझ दी है कि हम उसे जो सत्य है, जान सके, और हम उसमें है जो सत्य है अर्थात उसक पुत्र यीशु मसीह में। यही सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है" (1यूहन्ना 5:20)। **मसीह विश्वासियों को सच्चे और जीवते परमेश्वर की सहभागिता में लाता है।**

यह उद्धार मनुष्य का कार्य नहीं है। हम अपने उद्धार के लिये कुछ भी विचार, कार्य, और कथन नहीं कर सकते। यह कार्य केवल परमेश्वर का है। बाइबल में परमेश्वर के बारे में लेख है, ''जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, हमारे कामों के अनुसार नहीं परंतु अपने ही उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार जो मसीह यीशु में अनंतकाल से हम पर हुआ————'' (2 तीमुथियुस 1:9)। **परमेश्वर केवल अपने अनुग्रह से उद्धार करता है।** उद्धार कुछ ऐसा नहीं है जिसके हम हकदार है। यह एक दान (उपहार) है जो यीशु मसीह में निःशुल्क दिया जाता है। ''विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है यह कार्यों के कारण नहीं जिससे कि कोई घमंड कर'' (इफिसियों 2:8–9)। कोई मनुष्य कभी गर्व नहीं कर सकता कि उसने अपने उद्धार में कुछ योगदान किया है। उद्धार न तो चाहने वाले पर, और न दौड़ धूप करने वाले पर निर्भर है, परंतु परमेश्वर पर जो दया करता है (रोमियों 9:16)।

सच्चा विश्वास

अब चूंकि परमेश्वर पापियों को विश्वास देकर उनका उद्धार करता है, बिना विश्वास के उद्धार असंभव है। **बिना विश्वास के कोई भी परमेश्वर की सच्ची संतान नहीं है।** ''विश्वास के बिना उसे (अर्थात परमेश्वर को) प्रसन्न करना असंभव है'' (इब्रानियों 11:6)। "जो पुत्र पर विश्वास करता है अनंत जीवन उसका है परंत वह जो पुत्र को नहीं मानता जीवन को नहीं देखेगा परंतु परमेश्वर का प्रकोप उस पर बना रहता है" (यूहन्ना 3:36)। क्या आप परमेश्वर के प्रकोप और नर्क में अनंत विनाश से बचना चाहते हैं? क्या आप आपके पापों के बोझ से दबे हैं और पापों की क्षमा चाहते है? क्या आप परमेश्वर और उस के पुत्र यीशु मसीह को जानना और अनंत जीवन की आशीषों का आनंद पाना चाहते हैं? यीशु कहते हैं ''परमेश्वर पर विश्वास रख'' (मरकुस 11:22)। एक व्यक्ति ने एक बार पूछा ''उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं?'' उसे उत्तर दिया गया, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा" (प्रेरितों के काम 16:30–31)। **परमेश्वर आपको विश्वास करने की *बुलाहट* देते हैं।**

सच्चा विश्वास क्या है? विश्वास में तीन बातें हैं

1. यह परमेश्वर, मसीह, मनुष्य और उद्धार के कुछ निश्चित तथ्यों का ज्ञान है

2. यह मान्य करता है कि वे तथ्य सत्य है

3. यह सच्चे परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह को निज उद्धारकर्ता जानकार उन पर भरोसा करना और निर्भर होना है।

आपको क्या विश्वास करना अवश्य है?

1. आपको यह विश्वास करना अव"य है कि परमेश्वर संसार का महिमामय सृजनकर्ता, संभालने वाला, और शासक (राजा) है। सब बातों के लिये आप उस पर निर्भर है।

2. आपको यह विश्वास करना अव"य है कि परमेश्वर से प्रेम करना, उसकी आराधना, और सेवा करना और आज्ञापालन करना, आपका कर्तव्य है। महान और महिमामय परमेश्वर आपके आदर सम्मान के योग्य है।

3. आपको यह विश्वास करना अव"य है आप एक पापी हैं जो परमेश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह नहीं कर सकते, आप नरक में अनंतकालीन पीड़ा के हकदार है।

4. आपको यह विश्वास करना अव"य है कि परमेश्वर ने पापियों का उद्धार करने अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को भेजा। मसीह ने क्रूस पर मृत्यु का सह कर और अपने बेशकीमती लहू को बहा कर उद्धार के कार्य को सम्पन्न किया, जयवंत उद्धारकर्ता बनकर वह तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। मसीह से बाहर उद्धार नहीं है।

5. आपको यह विश्वास करना अव"य है कि मसीह में परमश्वेर आपका उद्धारकर्ता है जो आपको आपके पापों से छुटकारा देता है और आपको अनंत जीवन प्रदान करता है।

सच्चा विश्वास व्यक्ति से उसके पापों का पश्चाताप कराता है। यदि आप अपने पापों में लगातार बने रहते हैं, आप नहीं कह सकते कि आप परमेश्वर ओर यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं। यीशु आज्ञा देते है ''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'' (मत्ती 4:17)।

वास्तविक पश्चाताप में 3 बातें हैं–

1. यह इस तथ्य की स्वीकारोक्ति है कि आप वास्तव में पापी हैं जिसे उद्धार की आवश्यकता है।

2. यह पाप के प्रति ईश्वरीय शोक है। आप आपके पाप के बुरे परिणामों पर विलाप नहीं करते, परंतु आप इस बात से शोकित होते हैं कि आपने आपके सृजनहार, संभालने वाले, और शासक (राजा) परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

3. यह पापों से मन फिराना और उनका परित्याग करना है। आप अब आगे दुष्टता का जीवन नहीं जीना चाहते, परंतु परमेश्वर और उसकी धार्मिकता की खोज करना चाहते हैं।

सच्चा विश्वास विश्वासी के हृदय को धन्यवाद से भरता है ताकि वह परमेश्वर का आज्ञापालन करना चाहे। विश्वास के कारण वह देखता है कि उसके पापों से उसका उद्धार करने में परमेश्वर कैसा अद्भुत है। वह परमेश्वर से प्रेम करता है और परमेश्वर की दी गई सभी आज्ञाओं का पालन करना चाहता है। यद्यपि वह परमेश्वर की व्यवस्था का पालन सिद्ध रूप में नही कर सकता, वह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करता है। यीशु कहते हैं ''यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे'' (यूहन्ना 14:15)। एक सच्चा विश्वासी परमेश्वर के प्रति अपने

प्रेम को कलीसियाई आराधना में विश्वासयोग्यता से उपस्थित होकर प्रकट करता है, जहां वह परमेश्वर के वचन अर्थात बाइबल का प्रचार सुनता है। वह नियमित रूप में बाइबल का पठन और अध्ययन करता है। वह प्रतिदिन प्रार्थना में अपने परमेश्वर के समक्ष उपस्थित होता है। वह परमेश्वर को अधिकाधिक जानने का प्रयत्न करता है, क्योंकि वह जानता है कि अभी उसने परमेश्वर के ज्ञान को पाने में एक छोटा सा आरंभ किया है। उसका शेष जीवन सच्चे परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह के बारे में अधिक से अधिक सीखने में समर्पित होगा।

वह व्यक्ति जिसका विश्वास वास्तविक है, वह यह नहीं सोचता कि उसका विश्वास, पश्चाताप, प्रेम और आज्ञाकारिता उसके अपने कार्य है। वह नहीं सोचता कि उद्धार में यह उसका भाग है या फिर इनस परमेश्वर को सहायता मिलती है। **वह जानता और मानता है कि ये सभी बातें उस उद्धार का एक अंग है जिसे परमेश्वर निःशुल्क दान स्वरूप देता है।** उसके हृदय और जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के काम के बिना विश्वास, पश्चाताप, प्रेम और आज्ञाकारिता संभव नहीं है। यीशु ने कहा ''मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15:5)। और न ही वह सोचता है कि उसके विश्वास पश्चाताप, प्रेम और आज्ञाकारिता के द्वारा वह परमेश्वर की मांग (आवश्यकता) को स्वयं पूरा करता है। वह विश्वास करता है कि उसका उद्धार केवल और केवल यीशु मसीह की मृत्यु आर पुनरुत्थान पर आधारित है।

क्या आप सच्चे परमेश्वर को जानते है?

क्या आप सच्चे परमेश्वर ओर उसके पुत्र यीशु मसीह को जानते है? क्या आपको अनंत जीवन की धन्य दशा का अनुभव है?

यदि नहीं **''परमेश्वर की आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करे**————————''(1 यूहन्ना 3:23)।

यदि आप पहिले से विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर और उसके पुत्र को अधिक बेहतर रूप में जानने का प्रयत्न करे।

यीशु कहते हैं, ''और अनंत जीवन यह है कि वे तुझे जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और यीशु मसीह को जाने जिसे तूने भेजा है।''

आपने जो पढ़ा, उसे लेकर यदि आपके मन में कुछ प्रश्न है, या आप परमेश्वर के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं, अधिक जानकारी के लिये हमें लिखें और पूछें।

हिन्दी अनुवाद : समीर सालवे